ॐ पार्थाय प्रतिबोधितां भगवता नारायणेन स्वयम्
व्यासेन ग्रथितां पुराणमुनिना मध्ये महाभारतम् ।
अद्वैतामृतवर्षिणीं भगवतीमष्टादशाध्यायिनीम्
अम्ब त्वामनुसन्दधामि भगवद्गीते भवद्वेषिणीम् ॥ १ ॥

१. ॐ हे श्रीमद भगवद गीता! हे अठारा अध्याय वाली, हे स्नेह मयी माता! मैं तुमारा ध्यान करता हूँ. तुमारे द्वारा पार्थ को स्वयं भगवान नारायण से प्रकाश मिला और तुमारी रचना पुरातन ऋषि व्यास देव ने महाभारत के युद्ध के मध्य में की. हे दिव्य माता! आप पुनर जन्म को नष्ट करने वाली हो और अद्वैत ज्ञान का अमृत बरसाने वाली हो.

नमोऽस्तु ते व्यास विशालबुद्धे फुल्लारविन्दायतपत्रनेत्र ।
येन त्वया भारततैलपूर्णः प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः ॥ २ ॥

२. हे ऋषि व्यास देव आपको मेरा नमस्कार है! विशाल बुद्धि और कमल की पँखुरियो जेसे नेत्रों से सुशोभित, आप ने ही महाभारत के तेल से पूर्ण ज्ञान रूपी दीपक को प्रज्वलित किया.

प्रपन्नपारिजाताय तोत्रवेत्रैकपाणये ।
ज्ञानमुद्राय कृष्णाय गीतामृतदुहे नमः ॥ ३ ॥

३ हे भगवान श्री कृष्ण! आपको मेरा नमस्कार है. पारिजात वृक्ष के समान आप अपने शरणागत भक्तो की सब इछाओ को पूरा करने वाले हो. आप का एक हाथ घोड़ो के अंकुश से सुसज्जीत है और आप स्वयं ही ज्ञान का

सार हो. आप ही श्रीमद भगवद गीता के अमृत रूपी ज्ञान को दुहने वाले ग्वाले हो.

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दन: |
पार्थो वत्स: सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत् || ४ ||

४ सारे उपनिषद (वेदों का अंत भाग) गाय हैं. श्रीमद भगवद गीता इन उपनिषद रूपी गायो का दूध है. भगवान श्री कृष्ण उनको दुहने वाले ग्वाले हैं. पार्थ बछरा है और शुद्ध बुधि वाले मनुश्य श्रीमद भगवद गीता के अमृत रूपी दूध को पीते हैं.

वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम् |
देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् || ५ ||

५ हे वसुदेव नंदन, माँ देवकी के परमानन्द, कंस और चारुण के नाशक, हे जगत गुरु भगवान श्री कृष्ण आपको मेरा नमस्कार है.

भीष्मद्रोणतटा जयद्रथजला गान्धारनीलोत्पला
शल्यग्राहवती कृपेण वहनी कर्णेन वेलाकुला |
अश्वत्थामविकर्णघोरमकरा दुर्योधनावर्तिनी
सोत्तीर्णा खलु पाण्डवै रणनदी कैवर्तक: केशव: || ६ ||

६. देखो नदी रूप महाभारत की यह युद्ध भूमि! भीष्म और द्रोण इसके दो पाट हैं. जयद्रथ इसका जल है और गंधार नरेश शकुनि इसका नील कमल है.शाल्य इसमें छुपा घड़ियाल है. कृपा इसका इस नदी का वेग है और कर्ण इसका महावेग है. अश्वत्थामा और विकर्ण इसमें छुपे भीषण मगरमच्छ हैं. दुर्योधन इसकी भीषण

भँवर है. ऐसी भयंकर नदी को भी पांडव श्री कृष्ण को कर्णधार बनाकर सरलता से पार कर गये.

पाराशर्यवच:सरोजममलं गीतार्थगन्धोत्कटं
नानाख्यानककेसरं हरिकथा सम्बोधनाबोधितम् ।
लोके सज्जनषट्पदैरहरह: पेपीयमानं मुदा
भूयाद् भारतपंकजं कलिमलप्रध्वंसिन: श्रेयसे ॥ ७ ॥

७ हे कमल रूपी महाभारत! आप दिन प्रति दिन हमारा शुभ करें! ! श्रीला व्यास देव के वचन रूपी सरोवर मे आप उत्पन हुई हैं. गीता की सुगंध से आप सुशोभित हैं. नाना प्रकार की कथाएं आपके पुंकेसर हैं. श्री हरी पर नाना उपदेशो से आप प्रफुलित हैं. कलयुग के दोषो की आप नाशक हैं. भोरे रूपी सज्जन पुरुष आपके अमृत रूपी वचनों को प्रसन्ता से उपभोग करते हैं.

मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिम् ।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम् ॥ ८ ॥

८. हे माधव, हे दिव्य आनंद के सागर! आपको मेरा नमस्कार है. आपकी कृपा से गूंगा सुवक्ता हो जाता है और अपंग पहाढ़ लाँघ जाता है.

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुत: स्तुन्वन्ति दिव्यै: स्तवै:
वेदै: साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगा: |
ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदु: सुरासुरगणा देवाय तस्मै नम: || ९ ||

९ हे परमेश्वर! ब्रह्मा, इंद्र, रूद्र एवं मरुत गण आपकी दिव्य स्तोत्त्रो से गुणगान करते हैं. सामवेद के गायक पद और क्रम विधि द्‌वारा वेद, वेदांग, और उपनिषदो को गाकर आपका गुणगान करते हैं. योगीजन ध्यान द्‌वारा अपने मन को आप मे स्थित कर आपका दर्शन करते हैं. हे परमेश्वर! देव और असुर गण भी आपका अन्त नही जानते हैं, आप को मेरा नमस्कार है!

हिंदी अनुवाद डॉ. प्रदीप गोयल, वैदिक संस्कृति संस्थानं,

founder@mantrayoga.org